ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-12* January- 2021
Innovation The Research Concept

भारतीय चित्रकला में प्रतिष्ठित महिला चित्रकारों के योगदान पर एक दृष्टि

A Look At The Contribution of Eminent Women Painters In Indian Painting

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 26/01/2021, Date of Publication: 27/01/2021

गीता अग्रवाल
सहायक प्राध्यापक,
चित्र कला विभाग,
साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय,
बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

जिस तरह जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं ने स्वयं को स्थापित किया है, उसी तरह चित्र कला के क्षेत्र में भी महिलाएं कुछ कर दिखाने को संकल्पित हैं। महिलाओं की कला क्षेत्र में भागीदारी का इतिहास लोक कला के प्रस्फुटन काल से आरंभ होता है। लोक कलाकार संप्रेषण मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा ही किया गया। जैसे–जैसे मानव का विकास होता रहा वैसे–वैसे महिलाओं की कला यात्रा भी विकसित होती चली गई, और यह प्रक्रिया आज भी उसी रूप में जारी है।

कला के क्षेत्र में भारतीय महिला कलाकारों का योगदान अमृता शेरगिल से आरंभ होता है वास्तव में अमृता शेरगिल का स्थान कला क्षेत्र में एक प्रोफेशनल कलाकार की तरह रहा अमृता शेरगिल ने यूरोपियन तकनीक तथा भारतीय विषयों को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास किया। उन्होंने बसौली तथा अजंता के आकारों तथा गोग्विन की रंग पद्धति को अपनाया । भारतीय उपमहाद्वीप में 1970 एक महत्वपूर्ण दशक रहा, जिसमें कुछ आत्म जागृत महिला कलाकारों का उदय हुआ। वास्तव में महिला कलाकारों का उद्देश्य चिंताएं एवं अभिव्यक्ति पुरुष चित्रकारों से थोड़ा भिन्न रही। भारत में आजादी के पश्चात प्रथम दशक में कुछ महिला कलाकार जैसे शानू लहरी, कमला राय चौधरी, कमला दास गुप्ता तथा अमीना अहमद आदि ने अपने को प्रोफेशनल कलाकार के रूप में स्थापित करने के लिए विभिन्न प्रयास किए। 1986 में ललित कला अकादमी त्रिवेणी कला संगम नई दिल्ली, भारत सरकार के मानवाधिकार वूमेन वेलफेयर मंत्रालय एवं राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय नई दिल्ली के संयुक्त प्रयासों से भारतीय महिला कलाकार शीर्षक से देश की प्रमुख महिला कलाकारों की एक संयुक्त कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

नारी कलाकारों ने नारी मन की सहज एवं सुकोमल भावनाओं को व्यक्त करने के सार्थक प्रयास किए हैं जीवन मूल्यों का ह्रास, सपनों में बिछड़ना, प्रेम की अभिव्यक्ति ,सुख–दुख का चित्रण, लोक मंगल की कामना, रहस्य, रोमांच, उत्सुकता एवं श्रृंगार जैसे अनेक भागों का मिश्रण बहुतायत में हुआ है। यह यात्रा भविष्य में अधिक सामर्थ्य मानरूप से अवश्य आगे बढ़ेगी।

Just as women have established themselves in every sphere of life, similarly in the field of painting art, women are determined to do something. The history of women's participation in the art field begins with the emergence of folk art. Folk artist communication was mainly done by women. As the human development continued, the art journey of women also continued to develop, and this process continues in the same form even today.

The contribution of Indian women artists in the field of art begins with Amrita Shergill. In fact, Amrita Shergill's place as a professional artist in the field of art, Amrita Shergill tried to unite European technology and Indian themes in one thread. He adopted the shapes of Basauli and Ajanta and the color method of Gogwin. 1970 was an important decade in the Indian subcontinent, with the emergence of some self-awakening female artists. In fact, the concerns and expressions of female artists differed slightly from those of male painters. In the first decade after independence in India some women artists like Shanu Lahiri, Kamla Rai Chaudhary, Kamala Das Gupta and Ameena Ahmed etc. made various efforts to establish themselves as professional artists. In 1986, with the joint efforts of the Lalit Kala Akademi Triveni Kala Sangam New Delhi, Ministry of Human Rights Women's Welfare of the Government of India and the National Museum of Modern Art New Delhi, a joint art exhibition of leading women artists of the country under the title Indian Women Artists was organized.

Female artists have made meaningful efforts to express the comfortable and tender feelings of the female mind, such as the depletion of life values, the separation of dreams, the expression of love, the depiction of happiness and sorrow, the wish of folk manga, the mystery, thrill, curiosity and adornment There is a mixture of many parts in abundance. This journey will surely progress further in future in a more powerful manner.

मुख्य शब्द : प्रतिष्ठित, योगदान, प्रस्फुटन, अनुष्ठानों, रचनात्मक, नारित्व, आकृतियां, अलंकारिक।

Prestigious, Contribution, Blossoming, Rituals, Creative, Narratives, Motifs, Figurative.

प्रस्तावना

जिस तरह जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं ने स्वयं को स्थापित किया है उसी तरह चित्र कला के क्षेत्र में भी महिलाएं कुछ कर दिखाने को संकल्पित हैं । परंतु आरंभिक काल में ऐसा नहीं था कला क्षेत्र में महिलाओं का अभाव सा रहा। इसका कारण भारतीय परिवारों की मानसिकता है ,वे महिलाओं को सदैव ही बंधनों में बांधते आए हैं। जबकि कला क्षेत्र के लिए खुले पन की आवश्यकता होती है। महिलाओं की कला क्षेत्र में भागीदारी के विषय में यहां तक कहा गया है कि जितने भी बड़े कलाकार हुए हैं वह सब पुरुष हैं । यह कथन आंशिक रूप से सत्य तो है ,परंतु अमृता शेरगिल सरीखे कलाकार इस बात की पुष्टि करते हैं कि यदि सुविधाएं दी जाएं तो महिलाएं पुरुषों से आगे निकल सकती हैं।

चित्रकला के इतिहास को देखा जाए तो महाभारत में एक कथा का वर्णन मिलता है, जिसमें चित्रलेखा राज कुमारी उषा के स्वप्न के आधार पर राजकुमार अनुज का चित्र बनाती हैं ।इसका अर्थ है कि महाभारत काल में महिलाएं भी चित्रकारी किया करती थी ,परंतु यह उनका शौक मात्र रहा होगा।

भारत में महिला कलाकारों के विषय में अगर बात की जाए तो इसका प्रस्फुटन लोक कला के साथ ही आरंभ हो जाता है ।लोक कला को केवल महिलाओं की कला माना जाता है। क्योंकि लोक कला का संबंध संस्कारों, उत्सवों, अनुष्ठानों आदि से होता है तथा महिलाएं इन संस्कारो, अनुष्ठानों, उत्सवों को श्रद्धा पूर्वक करते हुए लोक चित्रों का निर्माण करती है।भारतीय लोक कला परंपरा को प्रवाहित रखने में महिला कलाकारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जैसा कि हाल ही में श्रीमती मोतीकर्ण कपूरी देवी और सोनाबाई का नाम मधुबनी लोक कला के साथ गंगा देवी का बाटिक कला के साथ जुड़ा हुआ है। ऐसी ही अनेकों अनजान महिला कलाकारों ने लोक कलाओं को भारत में जीवित रखा है। इस प्रकार भारतीय लोक कलाओं में महिलाओं की बड़ी हिस्सेदारी रही है।

अध्ययन का उद्देश्य

अनेक महिला कलाकार हैं ,जो देश विदेश में अपनी सफलता का परचम लहरा रही हैं और भारतीय कला को नई राह दिखा रही हैं। भारतीय समाज में बेटियों को कला की शिक्षा किसी न किसी रूप में हर घर में दी जाती है। इस तरह वे कला से कहीं ना कहीं जुड़ी रहती हैं ।आज की महिलाओं ने इस क्षमता को और अधिक निखारा है और कला के एक बड़े क्षेत्र में कदम रखा है ।उन्होंने इस पुरुष प्रधान कला समाज में न केवल अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है वरन अपना अलग विशिष्ट स्थान सुनिश्चित किया ह महिला कलाकारों ने चित्रकला के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वह समाज सुधारक, सौंदर्य प्रेमी और कला जिज्ञासु बनकर उभरी हैं। समाज में फैली अव्यवस्था को सुधारने में भी अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभा रही हैं ।उनकी चित्रकला समाज को प्रेरित करने में सफल हुई है। उन्होंने अपनी विशिष्ट शैली से केवल भारत को ही नहीं बल्कि विश्व के कला जगत को गौरवान्वित करने में अपना योगदान दिया है।

विषय विस्तार

आधुनिक युग में महिला कलाकारों ने न केवल स्त्रियों को नई पहचान दिलाई है अपितु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनके अधिकारों को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका भी अदा की है। आधुनिक युग में महिलाओं की कला के क्षेत्र में भागीदारी काफी प्रभावशाली ढंग से बढी है। प्रारंभ में केवल कुछ ही महिला कलाकारों को जाना चाहता था। इनमें पारा एवं स्वर्णकुमारी का नाम प्रमुख है। इन दोनों कलाकारों ने ना केवल अपने को अपितु संपूर्ण नारी जाति को सम्मान दिलाया।

बहुत से कला समीक्षक और कलाकार अमृता शेरगिल, जो कि बीसवीं शताब्दी की मुख्य महिला कलाकार थी, की कलाकृतियों को आधुनिक भारतीय कला के एक प्रारंभिक बिंदु के रूप में देखते हैं। अमृता शेरगिल की माता हंगेरियन थी तथा पिता भारतीय सिख जिससे उन्हें पूर्व और पश्चिम की विरासत मिली। कला में अमृता शेरगिल के समक्ष एक केंद्रीय समस्या भारतीय नियति की खोज की थी। इसके लिए उन्होंने पश्चिमी कला के साथ–साथ भारतीय कला की समृद्ध परंपरा को पहचानने की कोशिश की। इसी का परिणाम है कि आधुनिक भारतीय कला में महिलाएं स्वयं को अधिक आश्वस्त महसूस करने लगी। एक प्रकार से अमृता शेरगिल कला क्षेत्र में नारीत्व के अवतार रूप में प्रकट हुई। उन्होंने स्वयं की रचनात्मक नवीनता के द्वारा एक सामान्य संस्कृति में शास्त्र विरुद्ध वातावरण प्राप्त किया। आज जब हम अमृता शेरगिल की बात करते हैं, तो एक ऐसा व्यक्तित्व हमारे सामने आता है जिसकी कला पूर्व और पश्चिम की कला शैलियों के संगम मात्र रूप में ही नहीं बल्कि भारत में आधुनिक कला के जन्मदाता के रूप में प्रतिष्ठित की जा सकती है। इस प्रकार भारत की आधुनिक चित्रकला के इतिहास में उनका नाम नींव के पत्थर के रूप में जाना जाता है।उन्होंने भारतीय विषयों को लेकर जिस प्रकार कलाकृतियों का सृजन किया वह प्रशंसनीय है। ऐसा जान पड़ता है कि वह अपने चित्रों में राजपूत चित्रों के रंगों से भी प्रभावित हुई हैं। उनका हाथियों का नहाना, शीर्षक चित्र बहुत सुंदर है। इसमें सुर्ख लाल रंग प्रयोग किया गया है। उनकी कला साधारण एवं अलंकारिक शैली की है। परंतु साथ ही वह बहुत भाव युक्त एवं अपने भावों से उत्पन्न करने वाली हैं। उनके चित्रों की आकृतियों का दुख का भाव, उस समय के कष्टप्रद जीवन को दिखाता है। इस कारण हम कह सकते हैं कि आप के चित्रों में भावों की सुंदरता भावों की भाषा एवं रंगों को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है। वह सर्वप्रथम भारतीय कलाकार थी जो तेलरंगों में ही चित्र बनाती थी।

1960 के दशक में भारतीय कला जगत में महिला कलाकारों की संख्या अत्यधिक बढी। साथ ही महिलाओं ने कला विषय पर लेखन कार्य तथा कला संग्रह

कार्य भी प्रारंभ किया। अंजलि इला मेनन, अमीना अहमद कर, गई अर्पिता सिंह, अपर्णा कौर, नीलिमा शेख, अनुपम सूद, माधवी पारेख, मीरा मुखर्जी, मृणालिनी मुखर्जी, नलिनी मालिनी, गोगी सरोज पाल आदि महिला कलाकारों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की जिससे अन्य महिला कलाकारों को प्रोत्साहन मिला और अनेक महिलाओं ने कला को एक पेशे के रूप में अपनाया।

अपर्णा कॉल अंतरराष्ट्रीय आधुनिक महिला चित्रकारों में से एक हैं। पंजाबी चित्रकार होने के नाते उन्होंने सिख गुरुओं और आध्यात्मिकता को अपनी कला का आधार बनाकर प्रस्तुत किया। उनकी कलाकृतियां अधिकतर महिलाओं पर आधारित हैं। उन्होंने इन्हीं से संबंधित सामाजिक समस्याओं को ध्यान में रखते हुए रक्षक ही भक्षक नामक चित्रों की एक पूरी श्रृंखला तैयार की। इसके अलावा उन्होंने विभिन्न सामाजिक विषयों को अपनी तूलिका से उकेरा। उनकी कला में किसी भी प्रकार की कोई अलंकारिकता हमें देखने को नहीं मिलती। उन्होंने सपाट धरातल पर अपनी सोच व रंगों की समझ को दर्शाते हुए चित्रों की स्थापना की। उन्होंने मानव आकृतियां साधारण रूप में चित्रित न करके उन्हें अपनी कल्पना शक्ति के आधार पर धरातल में कहीं उड़ती हुई, कहीं ध्यान मग्न और कहीं पर तो उन्होंने आकृतियों को बीच से कटा हुआ बनाकर हमें सोचने पर मजबूर कर दिया है। उन्होंने अपनी कलाकृतियों में स्केल, प्रकाल, चांदा, धागा, बादल व पानी के साथ मानव आकृतियों को अंकित किया है।

1945 में जन्मी गोगी सरोज पाल भारतीय महिला चित्रकारों में उच्च पायदान पर हैं । वे एक ऐसी महिला चित्रकार हैं जिसमें उनकी बोल्डनेस उनकी पहचान बन गई है। उनमें मानवीयता की गहरी समझ है। इस समझ को दर्शाते हुए उन्होंने अपने चित्रों में स्त्री पुरुष व बच्चेढं की दुनिया को बहुत ही सहज तरीके से उतारा है। दिवराला का सती कांड जो सन 1987 में हुआ था, पूरे देश को अपने तरीके से जिसने उद्वेलित कर दिया था, उसे अपनी नई चित्र श्रंखला में उन्होंने स्थान दिया। उन्होंने महिला पक्ष को बल देते हुए, महिला होने के लाभ बताऐ। एक महिला होने के नाते उन्होंने साबित कर दिया कि महिला कमजोर नहीं है, बस जरूरत है उसमें इच्छा शक्ति जागृत करने की।

अर्पिता सिंह आज समकालीन कला के क्षेत्र में अपने महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उनकी कलाकृतियां कला के क्षेत्र में अपनी एक अलग विशेषता रखती है। यह प्रसिद्ध चित्रकार परमजीत सिंह की अर्धांगिनी है। उनकी कलाकृतियों को तीन भागों में बांटा गया है। आकृति मूलक कृतियां, बाल कला पर आधारित कृतियां तथा अमूर्तवादी कृतियां।अर्पिता सिंह के रेखांकन उनकी पहचान बन चुके हैं। इस प्रकार इस महिला चित्रकार ने अपने आत्मबल वह रुचि को अपना ध्येय बना कर आज राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की है। अर्पिता सिंह की छोटी–छोटी झाडियां जो विभिन्न मन स्थितियों की प्रतीक भी है इस बात का अच्छा उदाहरण है। लेकिन बहुत कम युवा कलाकारों के चित्र ऐसे हैं जिनमें आकारों की ऐसी अर्थपूर्ण खोज और उनकी सार्थक संरचना देखने को मिलती है।

अनेक महिला कलाकारों ने कला को एक पेशे के रूप में अपनाया। अनेको महिलाओं ने अपनी व्यक्तिगत रुचि व योग्यता के अनुकूल कला की विविध विधाओं में परम कौशल और प्रसिद्धि को प्राप्त किया। जैसे कि ग्राफिक में अनुपमसुद का काम जिनका समकालीन चित्रकला में महत्वपूर्ण योगदान है वे शिल्पीचक्र तथा अन्य संस्थाओं की सदस्या रही हैं। ग्राफिक कलाकारों के ग्रुप आठ की संस्थापक अनुपम सूद ने ब्रिटिश काउंसिल स्कॉलरशिप के अंतर्गत स्कूल ऑफ आर्ट लंदन में छापा चित्र की शिक्षा ली। इसी श्रृंखला में गोगीसरोज पाल, अर्पिता सिंह, नलिनी मलिन आदि चितेरे समकालीन भारतीय कला में विशेष स्थान रखते हैं।

अनेक आधुनिक कलाकारों की पत्नियां आज स्वतंत्र रूप से एक बढ़ीं कलाकार के रूप में पहचानी जाती हैं। अर्पिता सिंह के अतिरिक्त मनुपारेख की पत्नी माधवी पारेख उनकी बेटी मनीषा पारेख भी कला जगत में अत्यंत संवेदनशील कलाकार हैं। हैंडमेड पेपर पर उनके अमूर्त रंग–रूप आकार एक साधना की तरह है। कलाकार सुबोध गुप्ता की पत्नी भारती खरे ने अपनी अनूठी प्रयोगधर्मी कलाकृतियों में बिंदियों का प्रयोग किया है। उनकी ये कलाकृतियां उनकी विशिष्ट रचना शीलता का परिचय देती हैं। चित्रकार अमिताभ दास की पत्नी मोना राय की कला में भी टेक्सचर का केंद्रीय महत्व है। कलाकार बलबीर कट्ट की पत्नी लतिका कट्ट की भी कला जगत में सक्रिय रूप से भागीदार हैं। सुप्रसिद्ध कलाकार विनोद बिहारी मुखर्जी की पत्नी लीला मुखर्जी एक उच्च स्तर की मूर्ती शिल्पकार रही हैं। उनकी बेटी मृणालिनी मुखर्जी तंतु मूर्ति शिल्प में अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं। एक अन्य नाम मीरा मुखर्जी का भी है । 1956 से अपने पति सुप्रसिद्ध मूर्ति शिल्प श्री विट्ठल के साथ लगातार प्रदर्शन आयोजित करने वाली कलाकार बी प्रभा की कला में भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। जिन्हें मुंबई आर्ट सोसाइटी का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। उनके चित्र बैंकॉक यूरोप तथा जापान के अनेक देशों में प्रदर्शित किए जा चुके हैं।

भारत की पहली वेब केंद्र चित्रकार शिल्पा गुप्ता भी समकालीन कला में एक बेमिसाल योगदान और स्थान रखती है। उन्होंने आधुनिक उपभोक्ता संस्कृति पर व्यंग करते हुए अपनी एक मल्टीनेशनल कंपनी खोली। इसी प्रकार एक अन्य कलाकार शकुंतला कुलकर्णी ने प्रिंट मेकिंग, पेंटिंग टेक्सटाइल, मूर्तिशिल्प और वीडियो आर्ट सभी माध्यमों में काम किया। महिलाओं के दमन को लेकर कला में कई तरह के काम किए। रजा पुरस्कार से सम्मानित सुजाता बजाज ने रंगों के समृत संसार को अमूर्तन के कारण अपनी पहचान बनाई। उन्होंने फ्रांस से स्कॉलरशिप भी प्राप्त की। इसी क्रम में अहमद कर का नाम बहुत महत्वपूर्ण है वो भारत की पहली कलाकार हैं जो पैरिस में सीधे पिकासो के प्रशिक्षण में काम कर चुकी हैं। आयल पेंटिंग,म्यूरल, और ग्राफिक तीनों में सक्रिय रही हैं ।

शांतिनिकेतन, कोलकाता से प्रशिक्षत जयश्री वर्णन भी कला के क्षेत्र में विशेष स्थान रखती है। वे कहती हैं जब मैं होती हूं सपनों में मुझे कला नजर आती है। जब मैं जागती हूं तो प्रत्येक रूपाकार और गति में मुझे कला नजर आती है। उनके चित्रों की परम्परागत आकृतियांआधुनिक दुनिया में प्रवेश पाना चाहती हैं।[६] एक अन्य कलाकार जयश्री चक्रवर्ती अपनी कलाकृतियों में टेक्शचर का बहुत ही संवेदनशील प्रभाव लिए प्रयोग करती हैं।प्रिंटमेकर जरीना ने देश–विदेश में नाम कमाया है, उन्होंने पेरिस के एतेलियेर से प्रशिक्षण प्राप्त किया। बहुचर्चित कलाकार अंजलि इला मेनन ने विदेशों में भारतीय कला को प्रचारित किया उन्होंने कई भित्ती चित्र भी बनाऐ।इला मेनन एक ऐसी उच्च कोटि की कलाकार हैं जिन्होंने अपनी कलाकृतियों में आकारों को निश्चित ही स्थान प्रदान किया है। इनके चित्रों में दुख भरी आंखें बहुत ही प्रभावशाली हैं जो सच्चाई एवं दुख को प्रकट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। स्त्री आकृतियों रशियन एवं रंगांकन बाइजेंटाइन सा दिखता है। उनके चित्रों की भूमि अधिकतर कठोर है। उनके आकार प्रतिमा की तरह गमगीन शांत व स्थिर हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार निष्कर्षतः आज हमारे देश में ही नहीं विदेशों में भी नारी को सम्मान की दृष्टि से देखा जाने लगा है। नारी ने अपने आत्मबल व रचना क्षमता के बल पर अपनी एक अलग पहचान बना ली है। इन महिला चित्रकारों से प्रेरित व प्रभावित होकर आज ना जाने कितनी महिलाएं इस क्षेत्र में आगे आई हैं। इतना ही नहीं उन्होंने अपने मौलिक अधिकारों को जाना तथा इसको दबाने वालों के खिलाफ आवाज भी बुलंद की है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भटनागर सुरेश कुमार संजय*
2. *भारत में शिक्षा का विकास कला दीर्घा अक्टूबर 2003 अंक 7*
3. *दास श्रीमती कुसुम भारतीय पाश्चात्य कला, उत्तर प्रदेश*
   हिंदी ग्रंथ अकादमी लखनऊ
4. *अग्रवाल आर के कला विलास, भारतीय चित्रकला का विवेचन*
5. *भारद्वाज विनोद, आधुनिक कला कोश, सचिन प्रकाशन*
6. *निरंजन राम समकालीन भारतीय कला, निर्मल बुक एजेंसी*
7. *डॉ जोशी अर्चना विश्व इतिहास में महिला चित्रकार*